Ch 4 कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री
अभ्यास

1. "शास्त्री जी को निष्काम कर्मयोई कहना अधिक उचित है |"

- शास्त्री जी के लिए कर्मा ही ईश्वर था | बिना किसी फल की आशा के वे सपूर्ण भाव से कर्मा में लगे रहते थे | जब भी उन्हें अपने कर्मा का फल पाने के अवसर मिले, उन्होंने उनकी उपेक्षा की | फल पाने के लालच से उन्होंने कभी कोई काम नहीं किया | शास्त्री जी के इस स्वभाव को देखते हुआ उन्हें केवल 'कर्मयोगी' कहना पर्याप्त नहीं है | उन्हें निष्काम कर्मयोगी ही कहना अधिक उचित है |

2. "शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीबा था |"

- गांधीजी देश के बहुत बड़े नेता थे | फ़िर भी उन्हें अदभुत विनम्रता, सादगी और सरलता थी | इन गुणों ने उन्हें अधिक महान और लोकप्रिय बना दिया था | गांधीजी के ये गुण लालबहादुर शास्त्री में भी थे | इसलिए शात्री जी का व्यक्तित्व बापू से अधिक करीब था |

3. "शात्री जी का सपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी, और समर्पण का अनुपम उदाहरण है|"

- शास्त्री जी कर्मा ईश्वर मानकर उसकी पूजा के रूपा में श्रम करते थे | देश और समाज की सेवा में ही उन्हें जीवन की सार्थकता लगती थी | उन्हें सादा भोजन और सादा पहनावा ही पसंद था | उन्होंने जो कुछ किया पूरी निष्ठा और लगन से किया | उनकी ये विशेषताए बहुत काम लोगो में पाई जाती है |

Qus . 2 अगर महात्मा गांधी आपके स्वप्न में आए तो आप उनसे कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे और महात्मा गांधी क्या-क्या उत्तर देंगे ? सोचिए और बताइए |

- में : बापूजी ये सत्य क्या होता है ?
  बापू : जिसका नाश कभी नहीं होता, जो अनत और सदा भरोसेलायक है, वही सत्य कहलाता है|
  में : बापू, क्या हमारे लिए जीवन में अहिसक बनबा सभव है ?
  बापू : जहा तक हो सके वहा तक किसी जीवा को आघात नहीं पहुचाना चाहिए |
  में : बापू आपने अपनी आत्मकथा कैसे लिखी ?

बापू : मुझे कई बार लम्बी जेलयात्रा करनी पड़ती थी | उनका उपयोग में आत्मकथा लिखने में करता था | आत्मकथा का अधिकाशा भाग जेल में ही लिखा गया |

Qus . 3 संवाद को आगे बधाईए | (जिसमे काम-से-काम-आठ से दस प्रश्न और जवाब हो)

- रिया : गांधीजी का जन्म कब हुआ था ?

  सुनील : गांधीजी का जन्मा २ अक्टूबर, १८६९ को हुआ था |

  रिया : गांधीजी ने उच्च शिक्षा कहा से प्राप्त की थी ?

  सुनील : गांधीजी ने इग्लैंड से उच्च सिक्सा प्राप्त की थी |

  रिया : गांधीजीदक्षिण अफ्रिका क्यों गए थे ?

  सुनील : गांधीजी वकील के रूप में एक मुस्लिम व्यापारी का मुकदमा लड़ने के लिए गए थे |

  रिया : दक्षिण आफ्रिका में किसका विरिधा किया ?

  सुनील : दक्षिण अफ्रीका में रहकर वहा की सरकार की रंगभेद की नीति का विरोध किया |

  रिया : अफ्रीका से लौटकर गांधीजी ने क्या किया ?

  सुनील : दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटकर गांधीजी ने यहाँ चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन को आगे बढाया |

  रिया : गांधीजी ने नमक सत्याग्रह कब किया ?

  सुनील : गांधीजी ने १९३० में नमक सत्याग्रह किया |

  रिया : १९४२ में कौनसा आंदोलन किया ?

  सुनील : १९४२ में 'अंग्रेजो, भारत छोडो' का आंदोलन किया |

Qus 4 निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से अनुलेखन कीजिए |

कोलकाता में हमारा घर एक शांत जगह पर है। हमारे बगीचे की दीवार के उस तरफ एक सँकरी सड़क है। यह सँकरी सड़क वन प्रांत पर जाकर खत्म होती है। इस सड़क के दोनों ओर मकान हैं और अधिक यातायात न होने से यह बहुत ही शांत रहती है। सारे दिन इसके आसपास गिलहरियाँ एक-दूसरे का पीछा करती हैं। हमारे आस-पास के पेड़ों पर अनेक प्रकार के पक्षी दिखाई पड़ते हैं। सारा दिन हवा में पक्षियों का संगीत तैरता रहता है।

अभ्यास

1. शास्त्री जी ने देश की किस आकांक्षा की पूरा किया ? कैसे ?

- प्रधानमंत्री के रूपा में पंडिता नेहरू एक समृद्ध राजनीतिक छोडकर गए थे | उनकी मृत्यु के बाद उसे कुशलतापूर्वक सँभालकर शास्त्री जी ने देश की आकांक्षा पूरी की | शास्त्री जी का चरित्र निर्मल था | उनमे अद्‌भुत संकल्पशक्ति थी | राष्ट्र को लाभ पहुचाना उनके हर कर्मा का एकमात्र उद्देश्य रहता था | उनके इन्ही गुलो के बल पर वे नेहरू जी की विरासत को सभालने और आगे बढ़ाने का कठिन काम पूरा करा सके |

2. लालबहादुरा शास्त्री पर गांधीजी के आदर्शो का क्या प्रभाव पड़ा ?

- लालबहादुर शास्त्री का जन्मा एक साधारण परिवार में हुआ था और उसीमे उनकी परवरिश भी हुई | प्रधानमंत्री जैसे उचे पड़ा पर पहुचने पर भी वे सामान्य ही बने रहे | विनम्रता, सरलता, सादगी और जनसेवा की भावना उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अनाज बन गई थी | ये सारे गन महात्मा गांधी के थे, जहॉ शास्त्री जी में अपने आप आ गए थे | गांधीजी की तरह उन्होंने अछूतोद्धार कार्यक्रम भी चलाया | इस प्रकार लालबहादुर शास्त्री पर गांधीजी के आदर्शो का गहरा प्रभाव पड़ा |

3. शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शरुआता कैसे हुई ?

- शास्त्री जी में कार्य के प्रति गहरी निष्ठा थी | वे महेनत करने की अदम्य क्षमता भी रखते थे | अपने इन्ही गुणों के कारण सं १९३७ में वे सयुक्त प्रात की व्यवस्थापिका सभा के लिए निर्वाचित हुआ | स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद कई बार वे संसद के लिए चुने गए | परंतु उनके संसदीय जीवन की वास्तविका शुरुआत सं १०३७ के निर्वाचन से ही हुई |

4. छात्रों के दीक्षात समारोह में शात्री जी ने कौन-से विचार व्यक्त किए?

- अलिगत विश्वविधालय के दीक्षात समारोह में शास्त्री जी ने छात्रों से कहा था की भविष्य में आप कुछ भी बने लेकिन सबसे पहले आप इस देश के नागरिक है | देश का सविधान आपको कुछ अधिकार देता है, साथ ही आप पर कुछ कर्तव्यों का भार भी

डालना है | देश में प्रजातंत्र होने के कारण प्रत्येक नागरिक को निजी स्वतंत्रता भी मिली है | इस स्वतंत्रता का उपयोग हमें समाज के हित में करना चाहिए |

- इस प्रकार छात्रों के दीक्षात समारोह में शात्री जी ने सविधान द्धारा नागरिको को मिली स्वतंत्रता के सदउपयोगा के बारे में अपने विचार प्रकट किए थे |

Qus . 2परिच्छेद में रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में से ढूंढकर उनहें शब्दकोश के क्रम में लिखिए ।

1. विद्यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी कहें तो कोई अतिशयोकित न होगी। विद्यार्थी काल में मानव में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं। इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है। यदि यह नीव दृढ बन जाती है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है। यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसे जान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है, जिस वृक्ष को प्रारंभ से सुंदर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है। इस प्रकार विद्यार्थी काल में जो बालक श्रम, 4.निम्न अनुशासन, संयम एवं नियमन के सांचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है।
   - रीढ़- मेरुदंड
   - अमिट-अटल
   - आधारशिला नीव
   - खाद -जमीन का उपजाऊपन बढ़ानेवाला पदार्थ
   - पल्लवित विकसित, जिसमें पल्लव लगे हों
   - सौरभ-सुगंध
   - सभ्य शिष्ट
   - शब्दों के अर्थ का शब्दकोश क्रम : अटल, जमीन का उपजाऊपन बढ़ानेवाल पदार्थ, नींव, मेरुदंड, विकसित, शिष्ट, सुगंध।

Qus . 4. एक था शेर। उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था। जगल के प्राणियों ने उसको सबकसिखाने की बात सोची । छोटी चींटी बोली, "मैं शेर का घमंड उतार दूंगी। (अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाइए और बताइए कि चींटी ने शेर काघमंड कैसे उतारा होगा?)

- एक था शेर। उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था। जंगल के प्राणियों ने उसे सबक सिखाने की बात सोची। छोटी चींटी बोली, "मैं शेर का घमंड उतार
- चींटी अपने बिल में गई और वहाँ से बहुत-सी चीटियों को ले आई। शेर जहाँ सो रहा था, वहाँ जाकर सभी चींटियाँ शेर के शरीर पर चढ़ गई। वे उसके पेट, पौठ और टांगों में बुरी तरह काटने लगी शेर उन्हें अपने पंजों से मारने की कोशिश करता था, तब वे उसके बालों में छिप जाती थीं। थोड़े ही समय में शेर आकुल व्याकुल हो गया, उस चींटी ने उससे कहा, "वनराज, इन चींटियों से परेशान होना
- आपको शोभा नहीं देता। आपको तो अपनी ताकत पर बहुत धमंड है, न?" शेर ने 1. कहा, "चींटी बहन, मैंने तुमसे हार मान ली। अब मैं कभी अपनी ताकत पर घमंड नहीं करूंगा। मैं शेर हूँ तो तुमने सवाशेर बनकर दिखा दिया।" जंगल के प्राणियों ने खुश होकर चींटी का विजय-जुलूस निकाला।